اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह रिसाला ( **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ) मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

नाम किताब : **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

पेशकश : शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत
(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल 1437 सि.हि.

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

## मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

**मुम्बई** : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

**देहली** : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

**नागपुर** : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 09373110621

**अजमेर शरीफ़** : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : 0145- 2629385

**हुब्ली** : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली – 580024. फ़ोन : 08363244860

**ह़ैदरआबाद** : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040 24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

# हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे : **(1)** वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे **(2)** मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला **(3)** मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला।''[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## किरदार के ग़ाज़ी

मुसल्मानों ने मुसल्सल कई रोज़ से रूमी क़ल्ए़ का मुह़ा-सरा किया हुवा था और एक मर्तबा रूमी क़ल्ए़ से बाहर आ कर मुसल्मानों से झड़प भी कर चुके थे लेकिन मुंह की खा कर वापस क़ल्ए़ में मह़सूर हो गए। जब सुल्ह़ के इ़लावा कोई सूरत बाक़ी न रही तो उन्हों

[1] .....البدور السّافرة فی امور الاخرة للسیوطی، الحدیث: ۳۶۲، ص ۱۳۱

ने लश्करे इस्लाम के सिपह सालार की जानिब पैग़ाम भेजा कि हम आप से सुल्ह़ करने के लिये अपना क़ासिद भेजना चाहते हैं। अगर आप ने हमारी येह अ़र्ज़ क़बूल कर ली तो हम इसे अपने और आप के ह़क़ में बेहतर समझेंगे और अगर आप ने इन्कार कर दिया तो यक़ीनन इस में सरासर नुक़्सान ही होगा। मुसल्मानों के सिपह सालार ने उन की पेशकश को क़बूल कर लिया और इर्शाद फ़रमाया : "ठीक है तुम अपने क़ासिद को भेज दो।" रूमियों ने मुसल्मानों के सिपह सालार को मु-तअस्सिर करने के लिये निहायत ही क़ीमती लिबास में मल्बूस एक दराज़ क़ामत शख़्स को सफ़ीर बना कर भेजा। चूंकि रूमी सफ़ीर ने मुसल्मानों के सिपह सालार को पहले नहीं देखा था इस लिये वोह मुसल्मानों के लश्कर के क़रीब पहुंच कर यूं मुख़ातिब हुवा : "ऐ गुरौहे अ़रब ! तुम्हारा सिपह सालार कहां है ?" मुसल्मान सिपाहियों ने एक त़रफ़ इशारा कर के बताया कि वोह वहां होंगे। जब सफ़ीर ने उस जगह पहुंच कर देखा तो उस की आंखें फटी की फटी रह गईं, क्यूं कि मुसल्मानों के सिपह सालार के बारे में शायद उस ने अपने ज़ेह्न में येह ख़ाका बनाया था कि उस का बहुत बड़ा दरबार होगा जिस में वोह अ़ज़ीमुश्शान तख़्त पर क़ीमती लिबास पहने बिराजमान होगा, बीसियों ख़ादिमीन उस के सामने सर झुकाए बा अदब उस के हुक्म की ता'मील के लिये हर वक़्त तय्यार खड़े होंगे, उस के आस पास पहरेदारों की एक फ़ौज होगी और उस तक पहुंचने के लिये शायद मुझे कई एक मराह़िल त़ै करना होंगे। लेकिन क्या देखता है कि एक कमज़ोर जिस्म और लम्बे क़द वाले बा रो'ब शख़्स ज़मीन पर बैठे

हैं और अपने हाथ से तीरों को उलट पलट कर जंगी हथियारों का मुआ़-यना कर रहे हैं। रूमी सफ़ीर ने उस शख़्स की त़रफ़ देखते हुए बड़ी ह़ैरानी से पूछा : "क्या आप ही मुसल्मानों के सिपह सालार हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "जी हां।" सफ़ीर ने कहा : "आप के ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा होने की क्या वज्ह है ? अगर तक्ये से टेक लगा कर या क़ालीन पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुअ़ज़्ज़ज़ ही रहते, आप ने ख़ुद को इन ने'मतों से क्यूं मह़रूम रखा हुवा है ?" इस पर मुसल्मानों के सिपह सालार ने फ़रमाया : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ बयान करने से ह़या नहीं फ़रमाता तो मैं आप से क्यूं शरमाऊं ? बात दर अस्ल येह है कि मेरी ज़रूरत का सामान ज़ियादा से ज़ियादा तलवार, घोड़ा और दीगर चन्द हथियार हैं, अलबत्ता ! अगर इन के इ़लावा मुझे किसी और चीज़ की ज़रूरत मह़सूस हो तो मैं अपने इस्लामी भाई मुआ़ज़ से क़र्ज़ ले लेता हूं, अगर मुआ़ज़ को कोई ह़ाजत होती है तो वोह मुझ से क़र्ज़ ले कर अपनी ज़रूरत पूरी कर लेते हैं (यूं हमारा दिल उन आसाइशों की जानिब माइल ही नहीं होता जिन का तज़्किरा तुम कर रहे हो ) बिलफ़र्ज़ ! अगर मुझे क़ालीन मुयस्सर हो भी जाए तो मैं उस पर कैसे बैठ सकता हूं जब कि मेरे दीगर भाई तो ज़मीन पर बैठते हैं (और मुझे इस त़रह़ का कोई इम्तियाज़ गवारा नहीं क्यूं कि) हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हैं, ज़मीन पर चलते हैं, इसी पर बैठ जाते हैं, इसी पर बैठ कर खा पी लेते हैं, इसी पर सो जाते हैं, इन बातों के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारा सवाब बढ़ने के साथ साथ मज़ीद द-रजात भी बुलन्द हो जाते हैं।"[1]

---

[1]....الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٥٥

*हम ख़ाक हैं और ख़ाक ही मावा है हमारा*

*ख़ाकी तो वोह आदम जदे आ'ला है हमारा*

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क्या आप जानते हैं कि येह सिपह सालार कौन थे ? जो फ़क़त़ गुफ़्तार के ग़ाज़ी नहीं बल्कि किरदार के ग़ाज़ी थे, जिन्हों ने अपनी शख़्सिय्यत से ऐसे शख़्स को मु-तअस्सिर कर दिया जो इन्हें मु-तअस्सिर करने आया था। येह सिपह सालार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामवर सह़ाबी और मुसल्मानों के अ़ज़ीम जर्नेल ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे जो **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम से मश्हूर हैं।

## नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम **आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राह़ बिन हिलाल बिन वुहैब बिन ज़ब्बह बिन ह़ारिस बिन फ़िह्र बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनानह क़-रशी फ़िह्री** है। सिल्सिलए नसब सातवीं पुश्त में **फ़िह्र** पर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से जा मिलता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत **अबू उ़बैदा** है और वालिद का नाम अगर्चे **अ़ब्दुल्लाह** है मगर दादा **जर्राह़** की निस्बत से मश्हूर हैं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे अबी उ़बैदा **उमैमा बिन्ते ग़नम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी इस्लाम ले आई

थीं, जिन का पूरा नाम **उमैमा बिन्ते ग़नम बिन जाबिर बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन आ़मिर बिन उ़मैरा बिन वदीआ़ बिन ह़ारिस बिन फ़िह्र** है, मां कि जानिब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिल्सिलए नसब नवीं पुश्त में फ़िह्र पर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से जा मिलता है।[1]

## हुल्यए मुबा-रका

**ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दराज़ क़द, दुब्ले पतले और इन्तिहाई नूरानी चेहरे वाले थे, सर के बालों और दाढ़ी मुबा-रका में मेहंदी लगाया करते थे।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सय्यत हर ए'तिबार से मु-तअस्सिर कुन थी। निहायत ही ज़हीन, बेह़द मुन्कसिरुल मिज़ाज, मिलन-सार और आ़बिदो ज़ाहिद होने में अपनी मिसाल आप थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार जंगी उमूर के माहिरीन में होता है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदाबीर मैदाने जंग का नक़्शा बदल दिया करती थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की क़ियादत में मुसल्मानों ने उस वक़्त की सब से बड़ी ताक़त रूम से टक्कर ली और काम्याबी ह़ासिल की।[2]

## क़बूले इस्लाम

**ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का

---

[1] .....الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۴۴۱۸ عامر بن عبد اللہ، ج ۳، ص ۴۷۵
تہذیب الاسماء، الجزء الثانی، النوع الثانی الکنی، حرف العین، ج ۲، ص ۵۳۷

[2] .....الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۴۴۱۸ عامر بن عبد اللہ، ج ۳، ص ۴۷۶
الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۴۵

शुमार उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने इब्तिदाअन इस्लाम क़बूल फ़रमाया, जिस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसल्मान हुए उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में हैं जिन्हों ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर इस्लाम क़बूल फ़रमाया।[1]

## अज़्वाज व औलाद

**ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक ज़ौजा थीं जिन से दो ही बेटे यज़ीद और उ़मैर पैदा हुए। ज़ौजा का नाम **हिन्द बिन्ते जाबिर बिन वह्ब बिन ज़बाब बिन ह़जीर** था।[2]

## ज़ुल हिज्रतैन

मक्कए मुकर्रमा में जब मुसल्मानों पर ह़द से ज़ियादा ज़ुल्मो सितम ढाए गए तो मुसल्मानों ने मक्का से हिजरत की, कुल तीन हिजरतें हैं : दो मक्का से ह़बशा की त़रफ़ और एक मक्का से मदीने की त़रफ़। **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह ख़ुश नसीब सह़ाबी हैं जिन्हें दो हिजरतों की सआ़दत ह़ासिल हुई, मक्का से ह़बशा की त़रफ़ दूसरी हिजरत में शरीक हुए और फिर मदीने की त़रफ़ हिजरत की सआ़दत ह़ासिल की।[3]

---

[1] ……الریاض النضرہ، ج ۲، ص ۳۴۶

[2] ……الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۵۹

[3] ……اسد الغابۃ، عامر بن عبد اللہ بن جراح، ج ۳، ص ۱۲۵

## तमाम ग़ज़्वात में शिर्कत

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह खुश नसीब सह़ाबी हैं जिन्हें ग़ज़्वए बद्र में शिर्कत के साथ साथ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में तमाम ग़ज़्वात में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हुई ।[1]

## रिज़ाए इलाही का मुज़्दा

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बैअ़ते रिज़्वान में शिर्कत की सआ़दत भी ह़ासिल है ।[2] और बेशक बैअ़ते रिज़्वान में शरीक होने वाले तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को रिज़ाए इलाही का मुज़्दा सुनाया गया है। चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَ اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِیْبًا ﴿۱۸﴾ (پ۲۶، الفتح:۱۸)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे तो **अल्लाह** ने जाना जो उन के दिलों में है तो उन पर इत़्मीनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह़ का इन्आ़म दिया।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुराद आबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْھَادِی इस आयत के तह़त

---

[1] ......الاصابة، الرقم ۴۴۱۸ عامر بن عبد الله، ج۳، ص ۴۷۵

[2] ......الرياض النضرة، ج ۲، ص ۳۵۰

''**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**'' में फ़रमाते हैं : हुदैबिया में चूंकि उन बैअ़त करने वालों को रिज़ाए इलाही की बिशारत दी गई इस लिये इस बैअ़त को बैअ़ते रिज़्वान कहते हैं ।''

## अमीनुल उम्मत

**ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह ख़ुश नसीब सह़ाबी हैं जिन्हें बारगाहे रिसालत से ''**अमीनुल उम्मत**'' का लक़ब अ़त़ा हुवा । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हर उम्मत में एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन **अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** हैं ।''[1]

## अमीन शख़्स का मुत़ा-लबा

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि अहले नजरान बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे पास एक ऐसा आदमी भेज दीजिये जो अमीन (अमानत दार) हो ।'' इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम्हारे पास एक ऐसा अमीन भेजूंगा जो वैसा ही अमीन है जैसा उसे होना चाहिये ।'' तो लोगों ने देखा कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा ।[2]

---

[1] .....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث: ۳۷۴۴، ج ۲، ص ۵۴۵

[2] .....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث: ۳۷۴۵، ج ۲، ص ۵۴۶

**मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : मत़लब येह है कि निहायत ही आ'ला दरजे का अमीन है जैसे कहा जाता है कि ज़ैद जैसा आ़लिम होने का ह़क़ है वैसा आ़लिम है। सारे सह़ाबा अमानत वाले हैं मगर **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अव्वल नम्बर अमानत दार।[1]

## महबूबे ह़बीबे ख़ुदा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन शक़ीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा : "सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक सब से ज़ियादा महबूब कौन था ?" इर्शाद फ़रमाया : "अबू बक्र, फिर उ़मर और इस के बा'द **अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم।" मैं ने पूछा : "फिर कौन ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कोई जवाब न दिया और ख़ामोश ही रहीं।[2]

## आप की ज़ात में कोई कलाम नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ज़ाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ ऐसे शख़्स हैं जिन के अख़्लाक़ के बारे में कोई कलाम नहीं।**"[3]

---

[1]..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 447

[2]..... سنن ابن ماجه، فضائل اصحاب رسول الله، فضل عمر، الحديث: ۱۰۲، ج ۱، ص ۷۵

[3]..... المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، باب الصوم جنة۔۔الخ، الحديث: ۵۲۰۶، ج ۴، ص ۲۹۹

## रोशन और प्यारा चेहरा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि कुरैश के तीन शख़्सों का चेहरा सब से ज़ियादा रोशन और प्यारा है, उन के अख़्लाक़ भी सब से अच्छे हैं और शर्मो ह़या में भी सब से बढ़ कर हैं। (वोह ऐसे हैं कि) अगर तुम से बात करें तो झूट न बोलें और तुम उन से बात करो तो न झुटलाएं। और वोह अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान और **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن हैं।"[1]

## इ़श्क़े रसूल का अ़-मली मुज़ा-हरा

ग़ज़्वए उहुद में जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे मुबारक "ख़ौद" की कड़ियां पैवस्त होने से ज़ख़्मी हुए तो **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह देख कर तड़प उठे और इ़श्क़े रसूल का अ़-मली मुज़ा-हरा करते हुए सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंच कर फ़ौरन ही उन कड़ियों को अपने दांतों से निकालने लगे, पहली कड़ी निकली तो साथ ही आप का सामने का एक दांत टूट गया और दूसरी कड़ी निकली तो दूसरा दांत भी टूट गया।[2]

## काफ़िर बाप का सर क़लम कर दिया

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कुरआने पाक पारह 26

---

[1] ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۲، ج ۱، ص ۵۲

[2] ......المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، الحدیث: ۵۲۰۸، ج ۴، ص ۳۰۰

**सू-रतुल फ़त्ह़** आयत नम्बर 29 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ ؕ وَ الَّذِیۡنَ مَعَہٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَی الۡکُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیۡنَہُمۡ (پ۲۶، الفتح: ۲۹)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल।

**नीज़ फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "तुम में से उस वक़्त तक कोई कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस के वालिदैन, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।"[1] तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इन दोनों नुसूस की मुंह बोलती तस्वीर थे और बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने तो इस का ऐसा अ़-मली मुज़ा-हरा फ़रमाया कि रहती दुन्या तक उसे याद रखा जाएगा, **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वोह सह़ाबी हैं जिन्हों ने इस्लाम और मुबल्लिग़े इस्लाम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में क़त़्अ़न किसी की परवाह न की क्यूं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ وَ الْبُغْضُ فِی اللّٰہِ** (या'नी मह़ब्बत और दुश्मनी सिर्फ़ **अल्लाह** के लिये हो) की मुंह बोलती तस्वीर थे। चुनान्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का काफ़िर बाप जंगे बद्र या उहुद के दौरान आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने आता मगर हट जाता। कई बार ऐसा ही हुवा और जब वोह आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आड़े आया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का **सर क़लम कर दिया।**"[2]

[1]......صحیح البخاری، کتاب الایمان، الحدیث: ۱۵، ج ۱، ص ۱۷

[2]......تھذیب التھذیب، حرف العین، ج ۴، ص ۱۶۳

## आप के ह़क़ में नाज़िल होने वाली आयत

**ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब अपने वालिद का सर क़लम किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓىٕكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ (پ۲۸،المجادلة:۲۲)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ा-लफ़त की अगर्चे वोह इन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया ।[1]

## सिद्दीक़े अक्बर के नज़्दीक आप का मक़ाम

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द ख़िलाफ़त के मुआ़-मले में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से इर्शाद फ़रमाया : ''येह दो मेरे पसन्दीदा अफ़राद हैं या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन दोनों में से जिस की चाहे बैअ़त कर लो ।''[2]

---

[1] .....المعجم الکبیر، الحدیث: ۳۶۰، ج ۱، ص ۱۵۵

[2] .....الاستیعاب فی معرفة الاصحاب، الرقم ۱۳۴۰ عامر بن عبد الله، ج ۲، ص ۳۴۲

## आप के नज़्दीक सिद्दीक़े अक्बर का मक़ाम

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू उ़बैदा ! क्या मैं आप (के हाथ पर आप) की बैअ़त न कर लूं ? क्यूं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : आप इस उम्मत के अमीन हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ऐसे शख़्स (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के आगे कैसे नमाज़ पढ़ सकता हूं जिन्हें प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारा इमाम बनाया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से पर्दा फ़रमाने तक वोह हमारे इमाम ही रहे।''[1]

## मरातिबे आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा ब ज़बाने मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा शफ़ीक़ और मेह्रबान **अबू बक्र**, दीनी मुआ़-मलात में सब से ज़ियादा सख़्त **उ़मर**, ह़या के मुआ़-मले में सब से ज़ियादा सच्चे **उ़स्मान**, **किताबुल्लाह** के सब से बढ़े क़ारी **उबय बिन का'ब**, इल्मुल फ़राइज़ को सब से ज़ियादा जानने वाले **ज़ैद बिन साबित** और ह़लाल व ह़राम के सब से बड़े आ़लिम **मुआ़ज़ बिन जबल** हैं और सुन लो ! हर उम्मत

[1] .....المستدرک، ذکر مناقب ابی عبیدۃ، الحدیث: ۵۱۶۴، ج۳، ص۳۰۰

में एक अमीन होता है इस उम्मत के अमीन **अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** हैं।''[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं ''ख़याल रहे कि येह सिफ़ात तमाम सह़ाबा में थीं मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ में **अ़ला वज्हिल कमाल** (या'नी कामिल त़ौर पर) थीं और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ में अमानत दारी के सिवा और बहुत सिफ़ात थीं मगर येह सिफ़त नुमायां थी इस लिये फ़रमाया कि इस उम्मत के अमीन अबू उ़बैदा हैं लिहाज़ा इस से न तो येह लाज़िम है कि बाक़ी सह़ाबा अमीन न थे, न येह कि जनाब अबू उ़बैदा में सिवाए अमानत दारी के और कोई सिफ़त न थी।''[2]

## सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़्वाहिश

एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दोस्तों के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे, इर्शाद फ़रमाया : ''आप लोगों की दिली तमन्ना क्या है ?'' किसी ने अ़र्ज़ की : ''मेरी तमन्ना येह है कि काश मेरे पास सोने से भरा हुवा एक कमरा होता और मैं वोह सारा राहे ख़ुदा में लुटा देता।'' किसी ने कहा : ''काश ! मेरे पास हीरे जवाहिरात से भरा हुवा कमरा होता और मैं उसे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर देता।'' अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : **''काश ! मेरे पास अबू**

---

[1]..... سنن ترمذی، کتاب المناقب، مناقب معاذ بن جبل، الحدیث: ۳۸۱۵، ج۴، ص۴۳۵

[2]..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 434

उ़बैदा जैसे मर्दों से भरा हुवा एक कमरा होता।"[1]

## फ़िरासते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की कितनी प्यारी और आ'ला सोच थी, न येह शोहरत के त़ालिब होते न दौलत के, बल्कि दौलत के हुसूल से पहले ही येह ह़ज़रात इस से छुटकारा पाने की तदाबीर सोच लिया करते थे, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़िरासत पर कु़रबान ! आप की तमन्ना कितनी ह़िक्मत भरी है कि माल स-दक़ा करने की तमन्ना करना भी अगर्चे अच्छा है मगर इस का दाइरए असर इतना वसीअ़ नहीं, ज़ियादा से ज़ियादा इस का फ़ाएदा एक फ़र्द या चन्द मख़्सूस अफ़राद को होगा लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे ज़हीन, दिलैर अफ़राद से पूरी मिल्लते इस्लामिय्या को फ़ाएदा पहुंचेगा और इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त का बाइ़स बनेगा।

## मन्सबे ख़िलाफ़त सोंपने की आरज़ू

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिज़ामी उमूर को चलाने और अपने मा तह़्तों के साथ हुस्ने सुलूक जैसे तमाम मुआ़-मलात से भी आगाह थे, बारगाहे रिसालत से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जो मर्तबा मिला था उस से भी बा ख़बर थे, इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वक़्ते विसाल अपनी तमन्ना का

[1]......الرياض النضرة،ج ٢،ص ٣٥١

इज़्हार कुछ यूं फ़रमाया : "अगर **अबू उ़बैदा** ज़िन्दा होते तो मैं अपने बा'द उन्हें ख़लीफ़ा बना देता, अगर मेरा रब कल क़ियामत में मुझ से **अबू उ़बैदा** को ख़लीफ़ा बनाए जाने के बारे में पूछता कि तू ने **अबू उ़बैदा** को क्यूं ख़लीफ़ा बनाया ? तो मैं कहता : "ऐ मेरे प्यारे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे ही प्यारे नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़ तरजुमान से सुना है कि हर उम्मत का एक अमीन होता है और इस उम्मत का अमीन **अबू उ़बैदा** है।"[1]

## ख़लीफ़ा के लिये इन्तिख़ाब

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया कि अगर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी को खुद ख़लीफ़ा बनाते तो किसे बनाते ? फ़रमाया : "मेरे वालिदे गिरामी या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को।" फिर पूछा : इन के बा'द ? फ़रमाया : "उ़मर को।" पूछा गया : इन के बा'द किसे बनाते ? फ़रमाया : "**अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** को।"[2]

शारेहे़ सह़ीह़ मुस्लिम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : इस ह़दीस में अहले सुन्नत के इस मौक़िफ़ की दलील है कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर कोई

---

[1]……تاریخ الاسلام للذہبی، الجزء الثالث، ج ۳، ص ۱۷۲

[2]……صحیح مسلم، فضائل الصحابة، من فضائل ابی بکر صدیق، الحدیث: ۲۳۸۵، ص ۱۳۰۰

वाज़ेह़ नस्स नहीं, बल्कि मन्सबे ख़िलाफ़त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिपुर्द किये जाने पर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इज्माअ़ था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को (ख़िलाफ़त के मुआ़-मले में) मुक़द्दम रखना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत के सबब से था । अगर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या किसी और की ख़िलाफ़त पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से कोई सराह़त होती तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के माबैन कभी नज़ाअ़ न होता ।[1]

ह़क़ीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : येह ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अपना अन्दाज़ा है कि अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने बा'द ख़ु-लफ़ा तरतीब वार मुक़र्रर फ़रमाते तो पहले ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर करते, फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को, फिर ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क्यूं कि ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में ख़िलाफ़त की तमाम सलाह़िय्यतें अमानत दारी, सियासत दानी वग़ैरा सब **अ़ला वज्हिल कमाल** (या'नी कामिल त़ौर पर) मौजूद थीं ।[2]

## आप की शराफ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि

[1]..... صحیح مسلم بشرح النووی، کتاب فضائل الصحابہ، باب من فضائل ابی بکر الصدیق، ج۸، الجزء الخامس عشر، ص۱۵۵

[2]..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 435

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अबू बक्र अच्छे आदमी हैं, उ़मर अच्छे आदमी हैं, **अबू उ़बैदा बिन जर्राह** अच्छे आदमी हैं, उसैद बिन हुज़ैर, साबित बिन क़ैस बिन शम्मास, मुआ़ज़ बिन जबल मुआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह़ येह सारे भी अच्छे हैं।[1]

**मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि ग़ालिबन येह ह़ज़रात एक मज्मअ़ में जम्अ़ होंगे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन सब को इस करम नवाज़ी से नवाज़ा कि इन के फ़ज़ाइल जम्अ़ फ़रमाए।''[2]

## जन्नती होने की सनद

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अबू बक्र जन्नती हैं, उ़मर जन्नती हैं, उ़स्मान जन्नती हैं, अ़ली, त़ल्ह़ा, ज़ुबैर, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, सा'द बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन ज़ैद और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ येह सब जन्नती हैं।''[3]

**मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि येह वोह ह़दीस है जिस की बिना पर इस मुबारक जमाअ़त को **अ़-श-रए मुबश्शरह** कहा जाता है। या'नी एक ह़दीस में इन दस को नाम बनाम जन्नत

[1]..... سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب معاذ بن جبل، الحدیث: ۳۸۲۰، ج۵، ص۴۳۷

[2]..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 545

[3]..... سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۷۶۸، ج۵، ص۴۱۶

की बिशारत दी गई। वरना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हर सह़ाबी मुबश्शर बिल जन्नत है, रब عَزَّوَجَلَّ (पारह 5 **सू-रतुन्निसाअ**, आयत : 95 में इर्शाद) फ़रमाता है : **وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى** (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया) इन नामों की येह तरतीब ख़ुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ही दी है रावी ने नहीं दी इसी तरतीब से इन के द-रजात हैं।[1]

## कजावे की चटाई और पालान का तक्या

ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़र्वह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए, देखा कि वोह कजावे की चटाई पर पालान को तक्या बनाए लैटे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''ऐ अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! तुम दूसरों की त़रह़ आराम देह बिस्तर पर क्यूं नहीं लैटते ?'' अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मेरे आराम के लिये येही काफ़ी है।''[2]

## घर का कुल सामान सिर्फ़ तीन चीज़ें

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी रिवायत में बयान करते हैं कि जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

---

[1]..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 436

[2]..... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی عبیدۃ بن الجراح، الحدیث: ۱، ج۸، ص۱۷۳

फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम तशरीफ़ लाए तो वहां के ख़ास व आ़म तमाम लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्तिक़्बाल किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''मेरा भाई कहां है ?'' लोगों ने पूछा : ''कौन ?'' फ़रमाया : ''अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''वोह अभी थोड़ी ही देर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंच जाएंगे। फिर जब अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवारी से उतरे और सलाम किया, ख़ैरिय्यत वग़ैरा दरयाफ़्त की और उन के घर तशरीफ़ ले गए। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के घर में सिर्फ़ तीन चीज़ें तलवार, तीरों का तरकश और कजावा देखा।''[1]

## ह़ज़रते उ़मर की आप को नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب से मरवी है कि जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम तशरीफ़ लाए। रास्ते में एक दरयाई गुज़र गाह पर पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ऊंट से उतरे, जूते उतार कर हाथ में पकड़े और ऊंट को साथ लिये पानी में उतर गए। अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''आज आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले ज़मीन के नज़्दीक बहुत बड़ा काम किया (या'नी येह आप के शायाने शान नहीं) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सीने पर हाथ

[1]……الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار عبیدۃ بن الجراح، الحدیث: ۱۰۲۹، ص۲۰۳

मारा और फ़रमाया : ''ऐ अबू उ़बैदा ! काश ! येह बात तुम्हारे इलावा कोई और कहता, बेशक तुम अ़रब लोग इन्सानों में से ज़लील तरीन लोग थे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीने इस्लाम के सदके़ तुम को मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन बना दिया लिहाज़ा जब भी तुम इसे छोड़ कर कहीं और इ़ज़्ज़त तलाश करोगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ज़िल्लत व ख़्वारी में मुब्तला कर देगा ।''[1]

## अमीनुल उम्मत का जज़्बए ईसार

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक थेली में चार सो दीनार डाल कर गुलाम को दिये और फ़रमाया : ''इन्हें ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ले जाओ फिर कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह इन्हें कहां सर्फ़ करते हैं ।'' चुनान्चे, गुलाम वोह थेली ले कर अमीनुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया है कि येह दीनार अपनी किसी ज़रूरत में इस्ति'माल कर लें ।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मुअमिनीन पर रह़्म फ़रमाए ।'' फिर अपनी लौंडी को बुलाया और फ़रमाया : ''येह सात दीनार फुलां को, येह पांच फुलां को और येह पांच फुलां को दे आओ ।'' यहां तक कि वोह सब के सब दीनार ख़त्म कर दिये । गुलाम ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

---

[1]……شعب الایمان للبیھقی، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۸۱۹۶، ج۶، ص۲۹۱

उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सारी सूरते ह़ाल बयान कर दी।''

फिर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इतने ही दीनार एक और थेली में डाल कर ग़ुलाम के ह़वाले किये और फ़रमाया : ''येह ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ले जाओ और कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह इन्हें कहां सर्फ़ करते हैं ?'' ग़ुलाम ने थेली ली और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''अमीरुल मुअमिनीन फ़रमाते हैं इस रक़म से अपनी कोई ह़ाजत पूरी कर लें।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मुअमिनीन पर रह़्म फ़रमाए।'' फिर अपनी लौंडी को बुला कर फ़रमाया : ''इतने दिरहम फ़ुलां के घर, इतने फ़ुलां के घर पहुंचा दो।''

इसी अस्ना में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा को इस बात का इ़ल्म हुवा तो अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं हमें भी अ़त़ा फ़रमाएं।'' उस वक़्त थेली में सिर्फ़ दो दीनार बाक़ी बचे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह थेली दीनारों समेत अपनी अह़लिया की त़रफ़ उछाल दी। ग़ुलाम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ़ सुनाया। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया : ''बेशक तमाम सह़ाबा आपस में भाई भाई हैं।''[1]

[1]……الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار الحسن بن ابی الحسن، الحدیث: ۱۵۶۲، ص۲۸۳، بتغیرٍ

## दुन्या अपने जाल में न फंसा सकी

एक रिवायत में यूं है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ''कुछ रोटी खिलाओ ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने थेले से रोटी के कुछ सूखे टुकड़े निकाल कर पेश किये। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह देखा तो आबदीदा हो गए और रोते हुए इर्शाद फ़रमाया : **''ऐ अबू उ़बैदा ! तुम्हें दुन्या अपने जाल में न फंसा सकी ।''**[1]

## काश ! मैं कोई मेंढा होता

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जन्नत की सनद अ़ता हो जाने के बा वुजूद तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल न हुए बल्कि क़ियामत की होल नाकियां, मैदाने मह़शर की वहूशतें और आ'माल का एह़तिसाब येह तमाम उमूरे आख़िरत इन्हें किसी वक़्त चैन न लेने देते । **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की भी येही कैफ़िय्यत रहती । चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर जब ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़-लबा होता, दुन्या की आज़्माइशी ज़िन्दगी और इस के फ़ितनों को देखते तो बे साख़्ता पुकार उठते : ''काश ! मैं कोई मेंढा होता जिसे घर वाले ज़ब्ह़ करते और (पका पर) उस का गोश्त खा लेते और शोरबा पी लेते ।''[2]

---

[1] ……مرقاۃ المفاتیح، کتاب المناقب، باب مناقب العشرۃ المبشرۃ، تحت الحدیث: ۶۱۲۰، ج۱۰، ص۴۹۴

[2] ……تاریخ مدینہ دمشق، ج۲۵، ص۴۸۲

## मैं खाल का कोई ह़िस्सा होता !

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कोई गोरा हो या काला, आज़ाद हो या गुलाम, अ़-जमी हो या अ़-रबी जिस के मु-तअ़ल्लिक़ मुझे मा'लूम हो कि वोह तक़्वा व परहेज़ गारी में मुझ से बढ़ कर है तो मैं येह पसन्द करता हूं कि मैं उस की खाल का कोई ह़िस्सा होता।"[1]

## क़ब्रो ह़श्र की होल नाकियां

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **ग़ीबत की तबाह कारियां** के सफ़ह़ा 67 पर है :

**मीठे मीठे इस्लमी भाइयो !** वाक़ेई आख़िरत का मुआ़-मला बेह़द तश्वीश नाक है, क्या मा'लूम आज ही मौत आ जाए और देखते ही देखते हम अंधेरी क़ब्र में जा पहुंचें, अव्वल तो मौत का तसव्वुर ही जान को घुलाने वाला है और साथ ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में ख़ुदा न ख़्वास्ता जहन्नम में डाल दिये गए तो उस का होलनाक अ़ज़ाब कैसे बरदाश्त करेंगे।

*फ़िक्रे मआ़श बद बला होले मआ़द जां गुज़ा*

*लाखों बला में फंसने को रूह़ बदन में आई क्यूं*

---

[1]......الزهد للامام احمد بن حنبل، أخبار عبيدة بن الجراح، الحديث: ١٠٢٧، ص ٢٠٣

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जि. 9 स. 934 ता 937 पर मुर्दे की बे बसी की कुछ यूं मन्ज़र कशी फ़रमाते हैं : वोह मौत का ताज़ा सदमा उठाए हुए रूह़ (कि निकलते वक़्त) जिस का अदना झटका सो ज़र्बे शमशीर (या'नी तलवार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार ज़र्बे तैग़ (या'नी तलवार के हज़ार वार) से सख़्त तर, बल्कि म-लकुल मौत (عَلَیْہِ السَّلَام) का देखना ही हज़ार तलवार के सदमे से बढ़ कर। वोह नई जगह, वोह निरी तन्हाई, वोह हर त़रफ़ भयानक बे कसी छाई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अचानक आना, वोह सख़्त हैबत नाक सूरतें दिखाना कि आदमी दिन को हज़ारों के मज्मअ़ में देखे तो ह़वास बजा न रहें। काला रंग, नीली आंखें देगों के बराबर बड़ी अबरक़ (चमकीली धात) की त़रह़ शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बैल के सींगों की त़रह़ लम्बे नोकदार कीले (या'नी अगले दांत), ज़मीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, क़दो क़ामत जिस्मो जसामत बला व क़ियामत कि एक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक मन्ज़िलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर्ज़) का फ़ासिला, हाथों में लोहे का वोह गुर्ज़ (या'नी हथोड़ा) कि अगर एक बस्ती के लोग बल्कि जिन्नो इन्स जम्अ़ हो कर उठाना चाहें न उठा सकें, वोह गरज कड़क की होलनाक आवाज़ें, वोह दांतों से ज़मीन चीरते ज़ाहिर होना, फिर इन आफ़ात पर आफ़त येह कि सीधी त़रह़ बात न करना, आते ही झन्झोड़ डालना, मोहलत न देना, कड़क्ती झिड़क्ती आवाज़ों में इम्तिह़ान लेना।

وَحَسْبُنَا اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ اِرْحَمْ ضُعْفَنَا یَا کَرِیْمُ یَا جَمِیْلُ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی نَبِیِّ الرَّحْمَۃِ وَاٰلِہِ الْکِرَامِ وَسَائِرِ الْاُمَّۃِ اٰمِیْنَ اٰمِیْنَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْن۔

**तरजमा :** और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हमारे लिये काफ़ी है और वोह सब से बड़ा कारसाज़ है। ऐ करम फ़रमाने वाले ! हमारी कमज़ोरी पर रह़मो करम फ़रमा, ऐ रब्बे जमील ! दुरूदो सलाम भेज नबिय्ये रह़मत (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर और इन की इ़ज़्ज़त वाली आल और बक़िय्या तमाम उम्मत पर। क़बूल फ़रमा, क़बूल फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रह़मो करम फ़रमाने वाले !

*खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई ह़ामी न कोई यावर*
*बता दो आ कर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## अच्छा मश्वरा क़बूल कर लिया

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज अगर हमें कोई ज़िम्मेदारी दे दी जाए तो हमारे रवय्ये में बहुत तब्दीली आ जाती है अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों की बात तक सुनना गवारा नहीं करते और ज़ेह़न में येही ग़लत़ ख़याल गर्दिश करता रहता है कि मेरी बात बिल्कुल ह़त्मी है, मेरा फ़ैसला बिल्कुल अटल है, मा तह़्त अगर कोई अच्छा मश्वरा दे तो उसे बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर देते हैं बल्कि बसा अवक़ात तो उन की दिल शिकनी भी कर बैठते हैं लेकिन **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के इस अ़ज़ीम गोशे को भी मुला-ह़ज़ा कीजिये कि सिपह सालार और बा

इख़्तियार होने के बा वुजूद ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बयान कर्दा जंगी ह़िक्मते अ़-मली को बग़ौर सुन कर न सिर्फ़ उस की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई बल्कि ख़ुशी का इज़्हार करते हुए उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी फ़रमाई ह़ालां कि वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मा तह़्त थे। चुनान्चे,

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ुतूह़ाते शाम में रूमियों के ग़ुरूरो तकब्बुर को तोड़ने के लिये इल्मे नफ़्सिय्यात का इस्ति'माल करते हुए एक नई तदबीर अ़मल में लाते हुए तमाम ग़ुलामों को जम्अ़ किया, इस्लामी लश्कर में ग़ुलामों की ता'दाद चार हज़ार थी ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन सब को मुसल्लह़ हो कर क़ल्ए़ की त़रफ़ जाने और ह़म्ला करने का हुक्म दिया। जब **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पता चला तो मु-तअ़ज्जिब हो कर पूछने लगे : ''ऐ अबू सुलैमान ! ग़ालिबन तुम्हारी इस तज्वीज़ से लड़ाई का मक़्सद ह़ासिल न होगा, येह चार हज़ार ग़ुलाम क़ल्ए़ पर ह़म्ला कर के फ़त्ह़ ह़ासिल नहीं कर सकते।''

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुअद्दबाना लहजे में जवाब देते हुए अ़र्ज़ किया : ''ऐ सरदार ! आप मुझे इस की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं मैं ग़ुलामों को क़ल्अ़ फ़त्ह़ करने की ग़रज़ से नहीं भेज रहा बल्कि बन्द लफ़्ज़ों में उन को येह पैग़ाम देना चाहता हूं कि ऐ सलीब के पुजारियो ! हमारी निगाहों में तुम्हारी कोई वक़्अ़त नहीं हमारे नज़्दीक तुम्हारी इतनी भी अहम्मिय्यत नहीं कि

तुम्हारे जैसे ज़लीलों और बुज़दिलों से हम ख़ुद लड़ने निकलने की ज़ह़मत गवारा करें तुम्हारी ज़िल्लत और सफ़ाहत को मद्दे नज़र रखते हुए हम ने अपने ग़ुलामों को तुम्हारे मुक़ाबले में भेजा है।'' **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस तज्वीज़ को बहुत पसन्द फ़रमाया और ख़ुश हो कर उन्हें इस की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई।[1]

## अमीरुल मुअमिनीन की ख़िदमत में मक्तूब

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई हमारे अस्लाफ़ न तो ह़क़ बात को क़बूल करने में कोई आ़र महसूस करते और न ही ह़क़ बात कहने में कोई आ़र महसूस करते बल्कि अगर सामने कोई बड़े से बड़ा ओ़हदे दार भी होता तो बिला झिजक उस से अपने दिली जज़्बात का इज़्हार कर देते। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सूक़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते नुऐ़म बिन अबी हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आया तो उन्हों ने मुझे एक काग़ज़ निकाल कर दिखाया जिस पर लिखा था : ''येह ख़त़ अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ व मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की त़रफ़ से अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ है।''

**اَلسَّلَامُ عَلَیْک** ! ह़म्दो सना के बा'द ! हम दोनों आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ करते हैं कि ''जो मुआ़-मला (या'नी

[1] .....فتوح الشام، الجزء الاول، ص ۱۳۴

ख़िलाफ़त) आप के सिपुर्द किया गया है वोह अहम तरीन है, आप को इस उम्मत के सुर्ख़ व सियाह की ज़िम्मेदारी सोंपी गई है, आप के पास मुअ़ज़्ज़ज़ व ह़क़ीर, दुश्मन व दोस्त सभी फ़ैसले करवाने आएंगे और अ़दलो इन्साफ़ हर एक का ह़क़ है। ऐ उ़मर ! ग़ौर कर लीजिये कि उस वक़्त आप की क्या कैफ़िय्यत होगी। हम आप को उस दिन से डराते हैं जिस दिन लोगों के चेहरे झुक जाएंगे, दिल कांप उठेंगे और तमाम हुज्जतें ख़त्म हो जाएंगी। सिर्फ़ एक बादशाहे ह़क़ीक़ी **अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत अपने जबरूत के साथ ग़ालिब होगी और मख़्लूक़ उस के सामने ह़क़ीर होगी, उस की रह़मत की उम्मीद और अ़ज़ाब का ख़ौफ़ होगा और हम आपस में गुफ़्त-गू करते हैं कि आख़िरी ज़माने में इस उम्मत का ह़ाल ऐसा हो जाएगा कि लोग ज़ाहिरी त़ौर पर तो एक दूसरे के भाई बनेंगे और दिली त़ौर पर दुश्मन होंगे हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं इस बात से कि येह ख़त़ आप को हमारी त़रफ़ से वोह बात पहुंचाए जो हमारे दिलों में नहीं, हम ने महूज़ आप की ख़ैर ख़्वाही के लिये आप को येह ख़त़ लिखा है। **وَالسَّلَام عَلَیْک**

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ख़त़ का जवाब यूं दिया : येह तह़रीर उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की त़रफ़ से अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ और मुआ़ज़ बिन जबल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की त़रफ़ है।

**اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا** : ह़म्दो सना के बा'द ! मुझे आप लोगों का

ख़त़ मिला जिस में आप ने वसिय्यत की है कि ''मेरा मुआ़-मला सख़्त तर है और मुझे इस उम्मत के सुर्ख़ व सियाह की विलायत सोंपी गई है, मेरे सामने शरीफ़ व ज़लील (या'नी घटिया), दुश्मन व दोस्त आएंगे, बेशक हर शख़्स का अ़द्ल में ह़िस्सा है।'' आप दोनों ने लिखा है कि ''ऐ उ़मर ! उस वक़्त तुम्हारी क्या ह़ालत होगी।'' बेशक उ़मर को इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ और मा'सियत से बचने की क़ुव्वत देने वाला सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है और आप लोगों ने मुझे लिखा है कि ''आप लोग मुझे उस मुआ़-मले से डराते हैं जिस से साबिक़ा उम्मतें डराई जाती रहीं।'' पहले ही रात और दिन के बदलने ने लोगों की अम्वात के साथ हर दूर को क़रीब और हर नए को पुराना कर दिया है नीज़ हर आने वाले को ह़ाज़िर कर दिया है यहां तक कि लोग अपने ठिकाने जन्नत या दोज़ख़ की त़रफ़ चले गए। फिर आप दोनों ने इस बात का भी इज़्हार किया है कि ''आख़िरी ज़माने में इस उम्मत का येह ह़ाल होगा कि लोग ब ज़ाहिर भाई भाई और दिल से एक दूसरे के दुश्मन होंगे।'' लेकिन आप लोग तो ऐसे नहीं और न ही येह वोह ज़माना है क्यूं कि इस ज़माने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रग़बत और उस का ख़ौफ़ ज़ाहिर है, लोग इस्लाह़े दुन्या के लिये एक दूसरे की त़रफ़ रग़बत करते हैं। और आख़िर में तह़रीर किया कि ''आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं इस बात से कि मैं येह ख़त़ पढ़ कर वोह मफ़्हूम लूं जो आप के दिलों में नहीं है जब कि आप ने तो ख़ैर ख़्वाही के लिये लिखा है।'' आप दोनों ने सच कहा है। मुझे

आयिन्दा भी आप के ख़त़ का इन्तिज़ार रहेगा, मैं आप ह़ज़रात (की ख़ैर ख़्वाही) से बे नियाज़ नहीं हूं।" وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمَا ।[1]

## ओ़हदा लिये जाने पर ह़म्दे इलाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब फ़िलिस्त़ीन में फ़त्ह़ ह़ासिल हुई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और अपने सिपह सालार **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तमाम तफ़्सीलात से आगाह करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन दौसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ एक मक्तूब रवाना किया, सब से पहले येह मक्तूब अमीरुल मुअमिनीन को पहुंचा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह ख़त़ पढ़ कर मुसल्मानों को सुनाया, मुसल्मान येह सुन कर ख़ुशी से तक्बीर व तह्लील के ना'रे लगाने लगे। आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से शाम की कैफ़िय्यत मा'लूम की, चूंकि उस वक़्त शाम मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की लपेट में था **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही मुत्तक़ी और परहेज़ गार नीज़ सीधे सादे थे और इन फ़ितनों को समझना निहायत दुश्वार था इस लिये अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुशा–वरत से **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ा़लिद बिन वलीद

---

[1] ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، الحدیث: ۱۰، ج۸، ص۱۴۸

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमा दिया । जब **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं, इत़ाअ़त तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा के लिये है।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तक़र्रुरी की ख़बर ख़ुद जा कर मुसल्मानों को सुनाई ।[1]

## अमीनुल उम्मत और सैफ़ुल्लाह का म-दनी मुका-लमा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस हुक्म नामे के मौसूल होने के बा'द जब **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लामी लश्कर के साथ उस मक़ाम पर पहुंचे जहां **सैफ़ुल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने लश्कर के साथ रूमियों से बर-सरे पैकार थे, चूंकि उस वक़्त **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवार थे आप ने अपने घोड़े से उतरना चाहा मगर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम दे कर उतरने से मन्अ़ कर दिया ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप से बहुत मह़ब्बत किया करते थे, दोनों ने एक दूसरे से गर्म-जोशी से मुसा-फ़ह़ा किया, **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गुफ़्त-गू का आग़ाज़ करते हुए फ़रमाया :

[1] .....فتوح الشام، خالد بن ولید فی الشام، الجزء الاول، ص ۲۰ تا ۲۴ ملخصاً

ऐ अबू सुलैमान ! जब अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक्तूब के ज़रीए येह ख़बर मिली कि आप को सिपह सालार मुक़र्रर कर दिया गया है तो मुझे बे पनाह ख़ुशी हुई, मैं आप की जंगी महारत से बख़ूबी आगाह हूं, मेरे दिल में तो आप के लिये ज़र्रा बराबर कीना नहीं । ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : बख़ुदा ! मैं कोई भी फ़ैसला आप से मुशा-वरत किये बिग़ैर नहीं करूंगा, ख़ुदा की क़सम ! अगर अमीरुल मुअमिनीन का हुक्म न होता तो मैं आप के होते हुए कभी भी येह मन्सब क़बूल न करता, क्यूं कि आप मुझ से पहले ईमान लाए हैं, आप तो ऐसे सह़ाबिये रसूल हैं कि बारगाहे रिसालत से **अमीनुल उम्मत** होने की सनद ह़ासिल है । फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी घोड़े पर सुवार हो कर **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साथ ले कर लश्कर की क़ियाम गाह की त़रफ़ चल पड़े ।[1]

## ओ़हदा ले कर आज़्माइश

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई जब किसी को आज़्माया जाता है तो ओ़हदा दे कर नहीं बल्कि ले कर आज़्माया जाता है, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अव्वलन तो किसी भी दुन्यावी ओ़हदे की ख़्वाहिश ही न फ़रमाते बल्कि इस से दूर भागते और बिलफ़र्ज़ कभी उन्हें कोई ओ़हदा दे दिया जाता तो उसे मुकम्मल एह़सासे ज़िम्मेदारी से निभाते और जब वोह ओ़हदा ले लिया जाता तो इस पर नाराज़ होने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते

[1]……فتوح الشام، الجزء الاول، ص ۳۵ ملخصاً

और इस त़रह़ ख़ुश होते जैसे कोई बहुत बड़ा बोझ इन के सर से उतार दिया गया हो, मगर अफ़्सोस ! आज हमारी ह़ालत तो येह है ओ़हदों के पीछे ऐसे भागते फिरते हैं जैसे आख़िरत में काम्याबी का दारो मदार ही इसी पर है और जब ओ़हदा मिल जाए तो शायद ही एह़सासे ज़िम्मेदारी से उसे पूरा करने की कोशिश करते हों, नीज़ जब वोह ओ़हदा ले लिया जाए तो ग़ीबतों, तोह्मतों, बोहतानों के अम्बार लग जाते हैं, काश ! हम भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सीरत पर आ़मिल हो जाएं और कोई ओ़हदा मिले या न मिले हमारे क़ुलूब ग़ीबत, तोहमत, बोहतान वग़ैरा बात़िनी अमराज़ से पाक ही रहें ।

## आप की करामत, बे मिसाल मछली

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 342 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''करामाते सह़ाबा'' सफ़ह़ा 140 पर है : ''आप (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) तीन सो मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर पर सिपह सालार बन कर **सैफ़ुल बह्र** में जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए। वहां फ़ौज का राशन ख़त्म हो गया यहां तक कि येह चौबीस चौबीस घन्टे में एक एक खजूर बत़ौरे राशन के मुजाहिदीन को देने लगे । फिर वोह खजूरें भी ख़त्म हो गईं। अब भुक-मरी (या'नी भूक से मर जाने) के सिवा कोई चारए कार नहीं था । इस मौक़अ़ पर आप की येह करामत ज़ाहिर हुई कि अचानक समुन्दर की त़ूफ़ानी मौजों ने

साहि़ल पर एक बहुत बड़ी मछली को फेंक दिया और उस मछली को येह तीन सो मुजाहिदीन की फ़ौज अठ्ठारह दिनों तक शिकम सैर हो कर खाती रही और उस की चरबी को अपने जिस्मों पर मलती रही यहां तक कि सब लोग तन्दुरस्त और ख़ूब फ़रबा हो गए। फिर चलते वक़्त उस मछली का कुछ हि़स्सा काट कर अपने साथ ले कर मदीनए मुनव्वरह वापस आए और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में भी उस मछली का एक टुकड़ा पेश किया। जिस को आप ने तनावुल फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि इस मछली को **अल्लाह तआ़ला** ने तुम्हारा रिज़्क़ बना कर भेज दिया। येह मछली कितनी बड़ी थी लोगों को इस का अन्दाज़ा बताने के लिये अमीरे लश्कर **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म दिया कि इस मछली की दो पस्लियों को ज़मीन में गाड़ दें। चुनान्चे दोनों पस्लियां ज़मीन पर गाड़ दी गईं तो इतनी बड़ी मेह़राब बन गई कि उस के नीचे से कजावा बंधा हुवा ऊंट गुज़र गया।''[1]

## एक करामत के ज़िम्न में कई करामतें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ऐसे वक़्त में जब कि लश्कर में ख़ूराक का सारा सामान ख़त्म हो चुका था और लश्कर के सिपाहियों के लिये भूक से मर जाने के सिवा कोई चारा ही नहीं था बिल्कुल ही ना गहां बिग़ैर किसी मेह़नतो मशक़्क़त के उस मछली का ख़ुश्की में मिल जाना इस को करामत ही कहा जा सकता है। फिर इतनी बड़ी

[1] ……صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ سیف البحر…الخ، الحدیث: ۴۳۶۰، ۴۳۶۱، ج۳، ص۱۲۷

मछली कि तीन सो भूके सिपाहियों ने उस मछली को काट काट कर अठ्ठारह दिनों तक ख़ूब शिकम सैर हो कर खाया, येह एक दूसरी करामत है। फिर मछली एक ऐसी चीज़ है कि मरने के बा'द दो चार दिनों में सड़ गल कर और पानी बन कर बह जाती है मगर आ़दते जारिया के ख़िलाफ़ महीनों तक येह मरी हुई मछली ज़मीन पर धूप में पड़ी रही फिर भी बिल्कुल ताज़ा रही न उस में बदबू पैदा हुई न उस का मज़ा तब्दील हुवा, येह तीसरी करामत है। ग़रज़ इस अ़जीबो ग़रीब मछली का मिल जाना इस एक करामत के ज़िम्न में चन्द करामतें ज़ाहिर हुईं जो बिला शुबा अमीरे लश्कर **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जन्नती सह़ाबी की बहुत ही अ़ज़ीम और **नादिरुल वुजूद** करामतें हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## अपने मा तह़तों से दिली मह़ब्बत

मुल्के शाम में जब त़ाऊ़न की वबा फेलने लगी तो उस वक़्त मुसल्मानों का एक लश्कर उरदन में था जिस के सिपह सालार **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने पास बुलाने के लिये उन की जानिब एक मक्तूब रवाना किया जिस में इर्शाद फ़रमाया : ''हमें एक ह़ाजत दरपेश है जिस में आप से मुशा-वरत बहुत ज़रूरी है। लिहाज़ा जैसे ही आप को मेरा येह मक्तूब मौसूल

हो फ़ौरन रख़्ते सफ़र बांध लीजियेगा, अगर रात को मिले तो सुब्ह़ का, सुब्ह़ मिले तो शाम का इन्तिज़ार न कीजियेगा ।'' **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्तूब पढ़ा तो फ़ौरन मक़्सद समझ गए और फ़रमाने लगे : ''मुझे अमीरुल मुअमिनीन की ह़ाजत बख़ूबी मा'लूम है, यक़ीनन अमीरुल मुअमिनीन उस शख़्स की ह़यात चाहते हैं जिस की मौत मुक़द्दर है ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जवाबन लिखा : ''मुझे आप की ह़ाजत का बख़ूबी इ़ल्म है आप मुझे बुलाने का अ़ज़्म तर्क फ़रमा दें क्यूं कि मैं मुसल्मानों के उस लश्कर में हूं जिसे तन्हा छोड़ना मेरे बस में नहीं है ।'' जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह जवाब मौसूल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पढ़ कर रोने लगे । (ग़ालिबन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सब्रो शुक्र, एह़सासे ज़िम्मेदारी और अपने लश्कर के हमराहियों से उन्सिय्यत व मह़ब्बत को देख कर ख़ुशी के आंसू रोए) पूछा गया : ''क्या **अबू उ़बैदा** इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं ।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक और मक्तूब आप की जानिब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था कि ''उरदन शेरों को बीमार करने वाली ज़मीन है और जाबिया की ज़मीन ख़ुश गवार है, आप मुसल्मानों को जाबिया ले कर चले जाएं ।'' इस मक्तूब को पढ़ते ही **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''हम अमीरुल मुअमिनीन के इस

हुक्म की जानो दिल से इत़ाअ़त करते हैं ।"[1]

## एह़सासे ज़िम्मेदारी के क्या कहने !

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एह़सासे ज़िम्मेदारी के क्या कहने ! उन के इ़ल्म में येह बात थी कि अमीरुल मुअमिनीन मुझे त़ाऊ़न की वज्ह से बुला रहे हैं लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस तक्लीफ़ को ज़र्रा भर अहम्मिय्यत न दी और अपने मा तह़्त लश्कर के मुजाहिदों से जुदाई को गवारा न किया, बल्कि **ब त़रीक़े अह़सन** अमीरुल मुअमिनीन की ख़्वाहिश को वापस लौटा दिया, जभी तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के शौक़ो वल्वले को सराहते हुए दूसरी जानिब कूच का हुक्म दे दिया ।

## मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

**ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर के साथ मक़ामे शैज़र पर क़ियाम किया तो रोज़ाना कुछ मुसल्मान लकड़ियां जम्अ़ करने के लिये जंगल जाया करते और उन को जला कर खाना वग़ैरा पकाते, एक दिन जब वोह गए तो वापस ही न आए, पता चला कि जबला बिन ऐहम की फ़ौज उन्हें क़ैदी बना कर ले गई है और उस की फ़ौज की ता'दाद भी अच्छी ख़ासी है । **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इजाज़त से ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दस सह़ाबए किराम

[1] ……المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، ذکر وفاة ابی عبیدة، الحدیث: ۵۱۹۵، ج۴، ص۲۹۶

عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को साथ ले कर उन मुसल्मान क़ैदियों को छुड़ाने के लिये निकल खड़े हुए, अभी रास्ते में ही थे कि उन का मुक़ाबला कुफ़्फ़ार के ऐसे लश्कर से हो गया जो तक़रीबन दस हज़ार फ़ौजियों पर मुश्तमिल था, ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत दस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ऐसी जवां मर्दी से लड़े कि कुफ़्फ़ार का लश्कर बोखला गया, या'नी एक मुसल्मान कुफ़्फ़ार के एक हज़ार के मुक़ाबले पर था, बिल आख़िर मुसल्मान लड़ते लड़ते थकन से बे ह़ाल हो गए और कुफ़्फ़ार ब ज़ाहिर उन पर ग़-लबा पाने लगे। ऐन उसी वक़्त मक़ामे शैज़र में अमीरे लश्कर **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ख़ैमे में आराम फ़रमा रहे थे कि अचानक घबरा कर उठ खड़े हुए और लश्कर को जंग के लिये फ़ौरन तय्यार होने का हुक्म दिया, इस अचानक हुक्म से तमाम लोग घबरा गए और आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : ''हुज़ूर क्या बात है ? आप ने अचानक ही जंग की तय्यारी का हुक्म दे दिया है।'' इर्शाद फ़रमाया : ''अभी अभी मैं ने ख़्वाब देखा कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ कर जगाया और इर्शाद फ़रमाया : ऐ इब्ने जर्राह़ ! तुम सो रहे हो, उठो और ख़ालिद बिन वलीद की मदद के लिये पहुंचो, उन्हें कुफ़्फ़ार ने घेरे में ले लिया है।'' येह सुनना था कि पूरे लश्कर ने फ़ौरन तय्यारी शुरूअ़ कर दी। जैसे ही ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचे तो कुफ़्फ़ार इस्लामी लश्कर को देख कर भाग खड़े हुए, लेकिन मुसल्मानों ने उन का तआ़क़ुब जारी रखा और इस ज़ोर से ह़म्ला किया

कि उन के क़दम उखड़ गए और उन्हें इ़ब्रत नाक शिकस्त का सामना करना पड़ा, नीज़ तमाम मुसल्मान क़ैदियों को भी छुड़ा लिया गया।[1]

*फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में*
*मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ख़ल्वत में फ़िक्रे मदीना

एक शख़्स **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रो रहे हैं, उस ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! किस चीज़ ने आप को रुलाया ?'' फ़रमाया : एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुसल्मानों के हाथों होने वाली फ़ुतूह़ात का ज़िक्र फ़रमा रहे थे, आप ने शाम का ज़िक्र भी फ़रमाया और मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू उ़बैदा ! अगर मौत तुम से मुअख़्ख़र कर दी जाए तो तुम्हारे लिये तीन ख़ादिम काफ़ी हैं : **(1)** एक वोह ख़ादिम जो तुम्हारी ख़िदमत करे **(2)** एक वोह जो तुम्हारे साथ सफ़र करे **(3)** एक वोह जो तुम्हारे अह्ल या'नी घर वालों की ख़िदमत करे । इसी त़रह़ तुम्हारे लिये तीन सुवारियां काफ़ी हैं : **(1)** तुम्हारे सफ़र की सुवारी **(2)** तुम्हारे बोझ उठाने वाली सुवारी **(3)** तुम्हारे ग़ुलाम की सुवारी ।'' बस इसी फ़रमान की वज्ह से मैं रो रहा हूं क्यूं कि मैं देख रहा हूं कि मेरा घर तो छोटी छोटी चीज़ों से भी भरा हुवा है, नीज़ मेरा अस्त़बल घोड़ों और ख़च्चरों से पुर है । मुझे येह फ़िक्र खाए जा रही है कि सरकार

[1] ……فتوح الشام، جبلۃ یحارب خالدا، الجزء الاول، ص ۱۱۵

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सामना कैसे करूंगा ? क्यूं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया है : "क़ियामत में मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब और मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह होगा जो मुझ से उसी ह़ाल में मिले जिस ह़ाल में मैं ने उस को छोड़ा था।"[1]

## आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़िक्मते अ़-मली

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम के वाली थे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे ख़िलाफ़त आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूल कर के **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शाम का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया, नई तक़र्रुरी का येह मक्तूब दौराने जंग मौसूल हुवा था लिहाज़ा **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िक्मते अ़-मली का मुज़ा-हरा करते हुए उस को छुपा दिया, जब जंग ख़त्म हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी मा'ज़ूली और **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तक़र्रुरी का इ़ल्म हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "आप ने मुझे उस मक्तूब के मु-तअ़ल्लिक़ क्यूं नहीं बताया जिस में आप की तक़र्रुरी का हुक्म था,

[1] ……كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ٣٦٢٥٨، ج٧، الجزء ١٣، ص ٩٤
الرياض النضرة، ج٢، ص ٣٥٣

गवर्नरी का ओ़हदा आप के पास था आप फिर भी मेरे पीछे नमाज़ पढ़ते रहे ?" **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने प्यार भरे अन्दाज़ में इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए, मैं ने आप को नहीं बताया लेकिन दीगर लोगों ने आप को बता दिया, मैं जंग के इख़्तिताम का मुन्तज़िर था अगर दौराने जंग बताता तो शायद जंगी मुआ़-मलात में ख़लल वाके़अ़ होता, इरादा येह ही था कि मुनासिब मौक़अ़ पर आप को बता दूंगा और वैसे भी मुझे गवर्नरी के ओ़हदे की कोई ख़्वाहिश नहीं और न ही मैं दुन्या के लिये कोई अ़मल करता हूं क्यूं कि मुझे मा'लूम है दुन्या एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगी और हम तो आपस में इस्लामी भाई हैं, **अल्लाह** के हुक्म को क़ाइम करने वाले हैं। ऐसे लोगों को इस बात से क्या ग़रज़ कि इन्हें किसी ने दुन्यवी या दीनी मुआ़-मले में शरीक किया हो या नहीं ? लेकिन गवर्नर आ़म लोगों से ज़ियादा फ़ितने के क़रीब होता है और उस से ग़-लत़ी के इम्कानात भी ज़ियादा होते हैं, ख़त़ा से तो वोह ही शख़्स बच सकता है जिसे **अल्लाह** बचाए। येह कहते हुए **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक्तूब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे दिया।[1]

## इशाअ़ते इल्म का अ़ज़ीम जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना **इयाज़ बिन ग़ुतै़फ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कि

[1]......الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٥٣

इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुए आप की ज़ौजा पास ही बैठी हुई थीं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का चेहरा दीवार की त़रफ़ था, हम ने आप की ज़ौजा से पूछा : "इन की रात कैसी गुज़री है ?" उन्हों ने कहा : "सह़ीह़ गुज़री ।" तो अचानक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमारी त़रफ़ देखा और इर्शाद फ़रमाया : "मेरी रात ठीक नहीं गुज़री ।" और फ़रमाने लगे : "क्या तुम मुझ से कोई इ़ल्मी बात नहीं पूछोगे ?" हमें बड़ा तअ़ज्जुब हुवा (कि इतने शदीद मरज़ में भी इशाअ़ते इ़ल्म का कैसा अ़ज़ीम जज़्बा रखते हैं) हम ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं ।" आप ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जो अपने और अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करे, मरीज़ की इ़यादत करे, रास्ते से कोई तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करे तो उस के लिये दस गुना अज्र है, रोज़ा एक ऐसी ढाल है जिसे कोई चीज़ चीर नहीं सकती और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे किसी जिस्मानी बीमारी में मुब्तला फ़रमाए तो वोह बीमारी उस के लिये मग़्फ़िरत का बाइ़स है ।"[1]

## रोज़ादार के लिये जन्नत की ज़मानत

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इशाअ़ते इ़ल्म का येह जज़्बा बारगाहे न-बवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ही मिला था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मसाइल पूछा करते थे । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

[1]...... تاریخ مدینہ دمشق، ج ۴۷، ص ۲۶۰

''जो र-मज़ान का रोज़ा रखे और तीन चीज़ों से बचा रहे तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।'' **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह !** वोह तीन चीज़ें कौन सी हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''ज़बान, पेट और शर्मगाह।''[1]

## नसीह़त आमोज़ वसिय्यत

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ऐसी नसीह़त करता हूं अगर तुम उसे क़बूल कर लो तो हरगिज़ ख़ैर से मह़रूम नहीं रहोगे, नमाज़ क़ाइम करो, र-मज़ान के रोज़े रखो, स-दक़ा करो, ह़ज करो, उ़म्रह करो, एक दूसरे के साथ भलाई करो, अपने उ-मरा (हुक्मरानों) को नसीह़त करो उन को धोके में न रखो, दुन्या तुम्हें हलाक न कर दे, बिला शुबा अगर कोई शख़्स हज़ार साल जी ले तो भी मौत उसे पछाड़ देगी, बेशक **अल्लाह** ने बनी आदम के मुक़द्दर में मौत लिख दी है इन की मौत यक़ीनी है, तुम में सब से बढ़ कर दाना शख़्स वोह है जो अपने रब का सब से ज़ियादा इत़ाअ़त गुज़ार और आख़िरत से ज़ियादा ख़बरदार है, **अल्लाह** की तुम पर सलामती और रह़मत हो। ऐ मुआ़ज़ ! लोगों से सिलए रेह़मी करते रहना।''[2]

## विसाले ज़ाहिरी

जब शाम में त़ाऊ़न की वबा फैली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को ख़ुत़्बा देने के लिये खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो !

[1] .....تاریخ مدینہ دمشق، ج ۵۴، ص ۱۶۶ مفہوماً

[2] .....الریاض النضرۃ، عبیدہ بن جراح، ج ۲، ص ۳۵۸

येह मरज़ तो रब की रह़मत, तुम्हारे नबी की दुआ़ और तुम से पहले गुज़रने वाले सालिह़ीन की मौत का सबब है।'' फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि इस बीमारी से आप को भी ह़िस्सा मिले। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ क़बूल हुई और चन्द दिनों बा'द त़ाऊ़न की बीमारी में मुब्तला हो गए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ पढ़ने जा रहे थे कि रास्ते में ही इन्तिक़ाल हो गया और त़ाऊ़न के सबब शहादत का मर्तबा पाया।[1]

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाले ज़ाहिरी 18 सिने हिजरी में शाम के शह्र उरदन में हुवा, उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र 58 साल थी और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, ह़ज़रते मुआ़ज़, ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स और ह़ज़रते ज़ह्ह़ाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ब्र में उतारा।[2]

## मज़ारे पुर अन्वार

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे पुर अन्वार मुल्के शाम के शह्र ''ग़ौर बैसान'' में मर्जए ख़लाइक़ है, शारेह़े मुस्लिम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन शरफ़ न-ववी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 676 हि.) फ़रमाते हैं कि ''**ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर एक अ़जीब क़िस्म की जलालत त़ारी है जो यक़ीनन उन के शायाने

[1] ......تاریخ مدینہ دمشق، ج:۲۸، ص:۱۰۸

الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۴۴۱۸ عامر بن عبد اللہ، ج ۳، ص ۴۷۸

[2] ......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، کتاب الکنی، ابوعبیدۃ بن جراح، ج ۴، ص ۲۷۳

शान है और जब मैं ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की तो वहां कई अ़जाइबात देखे ।''[1]

## एक ही दिन त़ाऊ़न का ह़म्ला हुवा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़-सना और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم चारों बुज़ुर्गों पर एक ही दिन त़ाऊ़न का ह़म्ला हुवा । ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''येह तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और तुम्हारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ है, नीज़ तुम से क़ब्ल नेक लोग इसी बीमारी के सबब फ़ौत हुए, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुआ़ज़ की औलाद को इस रह़मत से वाफ़िर ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमा ।'' चुनान्चे अभी शाम भी न हुई थी कि आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ त़ाऊ़न के मरज़ में मुब्तला हो गए जिन के नाम से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी कुन्यत रखी ।[2]

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपनी औलाद के लिये त़ाऊ़न की दुआ़ करना दर ह़क़ीक़त इन के लिये शहादत व रह़मत की दुआ़ करना है क्यूं कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे शहादत फ़रमाया है । जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : ''त़ाऊ़न हर मुसल्मान की शहादत है ।''[3] एक और रिवायत का ख़ुलासा है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

[1] ……تهذیب الاسماء، الجزء الثانی، الرقم ۸۲۲ ابوعبیدة بن الجراح، ج ۲، ص ۵۳۷

[2] ……مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب فی الطاعون ــ الخ، الحدیث: ۳۸۶۳، ج ۳، ص ۴۸

[3] ……صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب الشهادة سبع، الحدیث: ۲۸۳۰، ج ۲، ص ۲۶۳

ने इसे मुसल्मानों के लिये रह़मत बनाया है ।''[1]

## सन्दूक़ी क़ब्र खोदा करते

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि क़ब्र खोदने वाले मदीने में दो शख़्स थे एक बग़ली खोदता था जब कि दूसरा बग़ली खोदना नहीं जानता था (या'नी सन्दूक़ी खोदता था) सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र खोदने के लिये उन दोनों को पैग़ाम भेजा और कहा कि उन में जो पहले आएगा वोह ही **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये क़ब्र बनाए । तो पहले वोही सह़ाबी तशरीफ़ लाए जो बग़ली क़ब्र खोदते थे लिहाज़ा सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बग़ली क़ब्र खोदी गई ।'' बग़ली कब्र या'नी लह़द वाली क़ब्र खोदने वाले सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा ज़ैद बिन सुहैल अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे और सन्दूक़ी क़ब्र खोदने वाले **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, मदीना में दो ही बुज़ुर्ग सह़ाबी थे जिन्हें क़ब्र खोदना आती थी, इन का पेशा गोर कनी न था। इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि सन्दूक़ी क़ब्र मन्अ़ नहीं वरना **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे सह़ाबी ऐसी क़ब्र न खोदा करते और सह़ाबए किबार इन दोनों को पैग़ाम न भेजते, ख़याल रहे कि अगर्चे तमाम सह़ाबा क़ब्र खोदना जानते थे मगर वोह दोनों ह़ज़रात बहुत मश्शाक़ थे उन्हों ने चाहा कि क़ब्रे अन्वर बहुत आ'ला द-रजे की तय्यार हो जो बहुत तजरिबा कार ही कर सकता है ।[2]

1 ......كنز العمال، الحديث: ٢٨٤٣٠، الجزء العاشر، ج٥، ص ١٣١ ملتقطاً

2 ......मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 490. ब तसर्रुफ़

# आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी चन्द अहादीसे मुबा-रका

## (1)..... दिलों की कैफ़िय्यत

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द कोई नबी दज्जाल से डराने के लिये नहीं आया, पस मैं तुम्हें उस से डराता हूं ।'' फिर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की निशानियां बयान फ़रमाईं और फ़रमाया : ''शायद मुझे देखने वाले और मेरा कलाम सुनने वाले दज्जाल को पा लें ।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** क्या हमारे दिलों की कैफ़िय्यत उस वक़्त वैसी ही होगी जैसी अब है ? फ़रमाया : ''इस से बेहतर होगी ।''[1]

## (2)..... मज़बूत़ ढाल :

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रोज़ा ऐसी ढाल है जिसे कोई नहीं फाड़ सकता ।''[2]

## (3)..... बद तरीन लोग :

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आख़िरी कलाम येह था : ''यहूद को ह़िजाज़ से और अहले नजरान को जज़ीरए अ़रब से निकाल दो और जान लो कि क़ब्रों को सज्दा गाह बनाने वाले बद तरीन लोग हैं ।''[3]

---

[1] .....مسند البزار، مسند ابو عبیدہ بن الجراح، الحدیث: ۱۲۸۰، ج۴، ص۱۰۷

[2] .....السنن الکبری للبیھقی، کتاب الصیام، باب الصائم ینزہ صیامہ عن الغلط، الحدیث: ۸۳۱۴، ج۴، ص۴۵۰

[3] .....المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی عبیدہ بن جراح، الحدیث: ۱۶۹۱، ج۱، ص۴۱۴

## (4)..... मोमिन का दिल :

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मोमिन का दिल चिड़िया की त़रह़ कभी इधर और कभी उधर होता रहता है।''[1]

## (5)..... सब से अफ़्ज़ल नमाज़ :

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रोज़े जुमुआ़ सब से अफ़्ज़ल नमाज़ सुब्ह़ की नमाज़ है, यक़ीनन जो इसे पा ले बरोज़े क़ियामत बख़्श दिया जाएगा।''[2]

## (6)..... मुनाफ़िक़ की पहचान :

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे अपने बा'द न किसी मोमिन से ख़ौफ़ है न काफ़िर से क्यूं कि मोमिन को उस का ईमान बुराई से रोके रखेगा और काफ़िर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के कुफ़्र के सबब ज़लील फ़रमाएगा। अलबत्ता मुझे तुम पर मुनाफ़िक़ का डर है जो ज़बान का आ़लिम हो, दिल का जाहिल हो, ज़बान से वोह कहे जिसे तुम अच्छा समझते हो और काम वोह करे जिसे तुम बुरा समझते हो।''[3]

## (7)..... बाहमी मह़ब्बत करने वाले :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

[1] .....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابی عبیدة بن الجراح، الحدیث: ۵، ج۸، ص ۱۷۴

[2] .....مسند البزار، مسند ابی عبیده بن الجراح، الحدیث: ۱۲۷۹، ج۴، ص۱۰۶

[3] .....مسند الربیع، الاخبار المقاطیع عن جابر بن زید، ج ۱، ص ۳۶۲

इर्शाद फ़रमाया : ''कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले दो बन्दों के लिये कुर्सियां रखी जाएंगी जिन पर उन को बिठाया जाएगा यहां तक कि (लोगों का) ह़िसाबो किताब मुकम्मल हो जाए।''[1]

## (8)..... दस गुना अज्र :

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो किसी मरीज़ की इ़यादत करे अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करे या रास्ते से कोई तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करे तो उसे दस गुना अज्र मिलेगा।''[2]

## नेकी की दा'वत के म-दनी फूल

ह़ज़रते सय्यिदुना निमरान बिन मिख़्मर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लश्कर के साथ चलते हुए **नेकी की दा'वत के म-दनी फूल** कुछ यूं अ़त़ा फ़रमाए : ''सुनो ! बहुत से सफ़ेद लिबास वाले दीन के ए'तिबार से मैले होते हैं और बहुत से अपने आप को मुकर्रम समझने वाले ह़क़ीर होते हैं। ऐ लोगो ! नई नेकियां पुराने गुनाहों को मिटा देती हैं अगर तुम में से किसी की बुराइयां ज़मीनो आस्मान को भर दें, फिर वोह कोई नेकी करे तो हो सकता है कि वोह एक नेकी उन तमाम गुनाहों पर ग़ालिब आ जाए और उन को मिटा दे।''[3]

---

[1] .....الجامع الصغیر، الحدیث: ۷۸۶۸، ص ۴۸۱

[2] .....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الادب، باب فی تنحیة الاذی عن الطریق، الحدیث: ۳، ج۶، ص۲۱۸

[3] .....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابی عبیدة بن الجراح، الحدیث: ۳، ج۸، ص۱۷۳

# ماخذ و مراجع


| | |
|---|---|
| 1 | **القرآن الکریم:** کلام باری تعالیٰ، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 2 | **ترجمۂ قرآن کنز الایمان:** اعلیٰ حضرت امام احمد رضا ۱۳۴۰ ھ، مکتبۃ المدینہ |
| 3 | **صحیح البخاری:** امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ ھ، دار الکتب العلمیۃ |
| 4 | **صحیح مسلم:** امام مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ ھ، دار ابن حزم، بیروت |
| 5 | **سنن ابن ماجہ:** امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۷۳ ھ، دار المعرفۃ، بیروت |
| 6 | **سنن الترمذی:** امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی ۲۷۹ ھ، دار الفکر بیروت |
| 7 | **المعجم الکبیر:** الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ ھ، دار احیاء التراث العربی |
| 8 | **کتاب الزھد:** امام احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ ھ، دار الغد الجدید |
| 9 | **المستدرک:** امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری ۴۰۵ ھ، دار المعرفۃ، بیروت |
| 10 | **مسند الربیع:** الربیع بن حبیب بن عمر الازدی البصری، دار الحکمۃ، مکتبۃ الاستقامۃ |
| 11 | **مسند البزار:** امام احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار ۲۹۲ ھ، جامع العلوم والحکم |
| 12 | **مجمع الزوائد:** حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ھیتمی متوفی ۸۰۷ ھ، دار الفکر، بیروت |
| 13 | **المصنف:** حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ ۲۳۵ ھ، دار الفکر بیروت |
| 14 | **کنز العمال:** علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت |
| 15 | **شعب الایمان:** امام احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت |
| 16 | **السنن الکبریٰ:** امام احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت |
| 17 | **الجامع الصغیر:** امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت |

| | |
|---|---|
| 18 | **البدور السّافرة فی امور الا خرة:** امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ، مؤسسة الکتب الثقافیة |
| 19 | **معرفة الصحابة:** امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ ۴۳۰ھ، دار الکتب العلمیة |
| 20 | **الاستیعاب فی معرفة الاصحاب،** امام ابو عمرو یوسف بن عبد اللہ ۴۶۳ھ، دار الکتب العلمیة |
| 21 | **اسد الغابة:** ابو الحسن علي بن محمد بن الاثیر الجزري متوفی ۶۳۰ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت |
| 22 | **الاصابة فی تمییز الصحابة:** الحافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ، دار الکتب العلمیة |
| 23 | **الریاض النضرة:** امام احمد بن عبد اللہ المحب الطبری ۶۹۴ھ، دار الکتب العلمیة |
| 24 | **تاریخ مدینہ دمشق:** الحافظ ابو القاسم علی بن حسن الشافعی، المعروف بابن عساکر ۵۷۱ھ، دار الفکر |
| 25 | **تاریخ الاسلام:** امام محمد بن احمد بن عثمان الذهبی ۷۴۸ھ، دار الکتب العربی |
| 26 | **فتوح الشام:** ابی عبد اللہ محمد بن عمر الواقدی ۲۰۷ھ، دار الکتب العلمیة بیروت |
| 27 | **تهذیب التهذیب:** احمد بن ابن حجر عسقلاني شافعی ۸۵۲ھ، دار الفکر بیروت |
| 28 | **تهذیب الاسماء:** امام ابو زکریا محیي الدین بن شرف النووي ۶۷۶ھ، دار الفکر بیروت |
| 29 | **مرقاة المفاتیح:** علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ، دار الفکر، بیروت |
| 30 | **مرأة المناجیح:** حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ، ضیاء القرآن پبلیکیشنز |

# फ़ेहरिस्त


| मौज़ूअ़ | सफ़ह़ा | मौज़ूअ़ | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 1 | का मक़ाम | 12 |
| किरदार के ग़ाज़ी | 1 | आप के नज़्दीक सिद्दीक़े अक्बर | |
| नाम व नसब | 4 | का मक़ाम | 13 |
| हुल्यए मुबा-रका | 5 | मरातिबे आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा ब | |
| क़बूले इस्लाम | 5 | ज़बाने मुस्त़फ़ा | 13 |
| अज़्वाज व औलाद | 6 | सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ | |
| ज़ुल हिज्रतैन | 6 | رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़्वाहिश | 14 |
| तमाम ग़ज़वात में शिर्कत | 7 | फ़िरासते फ़ारूक़े | |
| रिज़ाए इलाही का मुज़्दा | 7 | आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ | 15 |
| अमीनुल उम्मत | 8 | मन्सबे ख़िलाफ़त सोंपने की आरज़ू | 15 |
| अमीन शख़्स का मुत़ा-लबा | 8 | ख़लीफ़ा के लिये इन्तिख़ाब | 16 |
| मह़बूबे ह़बीबे ख़ुदा | 9 | आप की शराफ़त | 17 |
| आप की ज़ात में कोई कलाम नहीं | 9 | जन्नती होने की सनद | 18 |
| रोशन और प्यारा चेहरा | 10 | कजावे की चटाई और पालान का | |
| इ़श्क़े रसूल का अ़-मली मुज़ा-हरा | 10 | तक्या | 19 |
| काफ़िर बाप का सर क़लम कर | | घर का कुल सामान सिर्फ़ तीन | |
| दिया | 10 | चीज़ें | 19 |
| आप के ह़क़ में नाज़िल होने वाली | | ह़ज़रते उ़मर की आप को नसीह़त | 20 |
| आयत | 12 | अमीनुल उम्मत का जज़्बए ईसार | 21 |
| सिद्दीक़े अक्बर के नज़्दीक आप | | दुन्या अपने जाल में न फंसा सकी | 23 |

| मौज़ूअ़ | सफ़ह़ा | मौज़ूअ़ | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| काश ! मैं कोई मेंढा होता | 23 | रोज़ादार के लिये जन्नत की | |
| मैं खाल का कोई ह़िस्सा होता ! | 24 | ज़मानत | 43 |
| क़ब्रो ह़श्र की होल नाकियां | 24 | नसीह़त आमोज़ वसिय्यत | 44 |
| अच्छा मश्वरा क़बूल कर लिया | 26 | विसाले ज़ाहिरी | 44 |
| अमीरुल मुअमिनीन की ख़िदमत | | मज़ारे पुर अन्वार | 45 |
| में मक्तूब | 28 | एक ही दिन त़ाऊ़न का ह़म्ला | |
| ओ़हदा लिये जाने पर ह़म्दे इलाही | 31 | हुवा | 46 |
| अमीनुल उम्मत और सैफ़ुल्लाह | | सन्दूक़ी क़ब्र खोदा करते | 47 |
| का म-दनी मुका-लमा | 32 | आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी चन्द | |
| ओ़हदा ले कर आज़्माइश | 33 | अह़ादीसे मुबा-रका | 48 |
| आप की करामत, बे मिसाल | | (1)..... दिलों की कैफ़िय्यत | 48 |
| मछली | 34 | (2)..... मज़बूत़ ढाल | 48 |
| एक करामत के ज़िम्न में कई | | (3)..... बद तरीन लोग | 48 |
| करामतें | 35 | (4)..... मोमिन का दिल | 49 |
| अपने मा तह़्तों से दिली मह़ब्बत | 36 | (5)..... सब से अफ़्ज़ल नमाज़ | 49 |
| एह़सासे ज़िम्मेदारी के क्या कहने ! | 38 | (6)..... मुनाफ़िक़ की पहचान | 49 |
| मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को | | (7)..... बाहमी मह़ब्बत करने | |
| ख़बर न हो | 38 | वाले | 49 |
| ख़ल्वत में फ़िक्रे मदीना | 40 | (8)..... दस गुना अज्र | 50 |
| आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़िक्मते | | नेकी की दा'वत के म-दनी फूल | 50 |
| अ़-मली | 41 | मआख़िज़ो मराजेअ़ | 51 |
| इशाअ़ते इ़ल्म का अ़ज़ीम जज़्बा | 42 | | |